Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 03/September/2023 IJRAW: 2023; 2(10):25-28 Accepted: 07/October/2023

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

*[1]डॉ0 हरिकृष्ण

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बीकॉन इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो कि जिस समाज में रहता है उस समाज के कुछ नियम व सिद्धान्त होते हैं जिसके आधार पर व्यक्ति को उस समाज के नियम व सिद्धान्तों के साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है इन सभी नियमों सिद्धान्तों के सामंजस्य स्थापित करने का दायित्व वहां की एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था पर जाता है जहाँ की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी वहाँ की वैसी ही समाज की सामाजिकता का विकास होगा, शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु वहां के शिक्षण की व्यवस्था कैसी है जिसके आधार पर शिक्षा की व्यवस्था होती है।

अब प्रश्न यह है कि शिक्षण के सुधार हेतु वहां की शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाया जाये तथा शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु शिक्षकों के प्रशिक्षण में नवीन तरीकों को अपनाया जाना चाहिये जिससे कि शिक्षकों में सुधार आये और शिक्षण में सुधार हो जो कि अति आवश्यक है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसे समझना है। इस सन्दर्भ में वर्तमान शिक्षण गुणवत्ता में प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के बारे में क्या राय है, इसके बारे में क्या विचार रखते हैं इस सम्बन्ध में अध्ययन किया।

मुख्य शब्दः सामंजस्य, प्रशिक्षण, अभिरूचियों, वैयक्तिक भिन्नता, गुणवत्ता

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधार शिला है। शिक्षा के द्वारा ही समाज का निर्माण होता है जिस समाज की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी वह समाज वैसा ही होगा प्रत्येक समाज अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही शिक्षा की व्यवस्था करता है परन्तु शिक्षा देने का कार्य शिक्षक है जिस समाज में जो शिक्षक शिक्षण करता है वह शिक्षक उस समाज के अनुरूप निर्धारित उददेश्यों की पूर्ति करने में सक्षम हैं या नहीं इसका निर्धारण उस शिक्षक की शिक्षण व्यवस्था पर के आधार होता है, वर्तमान परिस्थिति में देखा जाये कि जिस समाज के निर्धारित उददेश्यों की पूर्ति वर्तमान शिक्षण के माध्यम से कितनी हो रही है। यह सिद्ध करना कठिन हो रहा है वर्तमान में शिक्षण का दायित्व शिक्षक पर होता है साथ–साथ शिक्षण का प्रमुख आधार शिक्षा का पाठ्यक्रम होता है। जिसके आधार पर शिक्षक शिक्षण करता है यह निर्धारण शिक्षा का समाज के द्वारा पाठ्यक्रम से ही होगा। चल रहे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जो समाज के उददेश्य निर्धारित किये गये हैं वह उददेश्य शिक्षण के पाठ्यक्रम है तो उन उददेश्यों की प्राप्ति कहां तक हो रही है वह कैसी है इसका निर्धारण शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर ही कहा जा सकता है कि जो समाज के द्वारा निर्धारित उददेश्य है उनकी प्राप्ति कहां तक हो रही है यदि पूर्ण रूप से निर्धारित उददेश्यों की नहीं हो पा रही है। तो इसका यह आशय लगाया जा सकता है कि शिक्षण की गुणवत्ता में कोई ना कोई कमी रही होगी यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य के निर्धारित शिक्षण के सुधार हेतु शिक्षकों के प्रशिक्षण समुचित सुधार करने हेतु नये शोध करने की विशेष आवश्यकता है जिसके आधार पर ही समुचित रूप शिक्षण गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नवीन शिक्षण विधियों प्राविधियों तथा मूल्यांकन विधियों का उचित प्रयोग विद्यालय में प्रवेष प्रक्रिया के स्वरूप को नये आयाम से जोड़ना अधिक को विभाजित करना जिसके आधार पर

*Corresponding Author: डॉ0 हरिकृष्ण

शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है और बालकों के आधार पर देखा जाये तो उसकी रूचियों, अभिरूचियों, वैयक्तिक भिन्नता, अभिवृत्तियों, विद्यालीय पाठ्यक्रम, सामाजिक, आर्थिक आदि के आधार पर उसके समायोजन का निर्धारण करना जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षकों को चाहिये कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ध्यान को रखते हुए शिक्षण को और गुणवत्ता युक्त करने का प्रयासरत रहे। जिससे की बालकों में शिक्षा का सर्वांगीण विकास हो सके और शिक्षकों में प्रशिक्षण के माध्यम उचित परिवर्तन लाया जा सके और उसका प्रभाव शिक्षण पर पड़े।

अध्ययन की आवश्यकता

माध्यमिक स्तर के विद्यालय में शिक्षा गुणवत्ता की रूप रेखा के रूप में माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा ही उच्च शिक्षा की आधारशिला है। माध्यमिक विद्यालय की मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता के रूप में पाठ्यक्रम में गुणवत्ता रूप प्रयुक्त होनी चाहिये। जो मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता का अभिकलन किया जाता है। शिक्षा में नवाचार को लाना शिक्षकों में प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम का निर्धारण से मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारण होता है। सामाजिक रूपरेखा के रूप सामाजिक जटिलताओं को दूर करना और शैक्षणिक जलवायु शिक्षा के क्षेत्र विद्यालयों वातावरण के रूप में व शिक्षा को क्रम व्यवहार व प्रधानाचार्य के कार्यकुशलता, नेतृत्व कुशलता से मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता की रूपरेखा का निर्धारण होता है।

अध्ययन की समस्या

वर्तमान शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण का अध्ययन।

अध्ययन का उददेश्य

1. वर्तमान शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति पुरूष शिक्षकों का दृष्टिकोण।
2. वर्तमान शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति महिला शिक्षकों का दृष्टिकोण।
3. वर्तमान शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

वर्तमान शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति पुरूष व महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिये सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधियों के चरणों के अनुरूप किया गया।

शोध अभिकल्पः इस अध्ययन को पूर्ण करने हेतु दो स्थायी समूह अभिकल्पों की प्रक्रिया का अनुसरण किया गया।

जनसंख्या/न्यायदर्शः मेरठ जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों को इस अध्ययन की जनसंख्या मानते हुये 10 माध्यमिक विद्यालयों को यादृछिक विधि से चयनित किया गया प्रत्येक विद्यालय से 3 पुरूष एवं 3 महिला शिक्षकों को उद्देश्यपूर्ण न्यायदर्श से चयनित कर 100 शिक्षकों को चयन कर यह अध्ययन पूर्ण किया गया।

सारणी 1: शिक्षकोंका दृष्टिकोण का मापन

गुणवत्ता के कारक	पूर्ण सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्ण असहमत	सार्थकता परिणाम
गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	26.7	29.7	23.0	19.6	1.0	56.4
विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	36.0	26.0	13.0	11.0	14.0	62
प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	26.9	24.1	18.7	15.3	15.0	51
भौतिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	21.1	22.7	18.0	20.0	18.2	43.8
व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति दृष्टिकोण	15.0	21.0	30.0	15.0	19.0	36
मूल्यांकन के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	33.0	40.0	16.0	6.0	5.0	73

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने उद्देश्य नं0 1 विलेषण किया जिसमें शिक्षा गुणवत्ता को छह भागों में विभाजित कर शिक्षकों के दृष्टि कोण को 5 बिन्दुओं पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एवं पूर्ण सहमत पर विचारों की प्रतिशतता उपरोक्त सारणी में दर्शायी गयी है। सहमत की प्रतिशत शिक्षा शिक्षा गुणवत्ता के प्रति 56.4 विषय की गुणवत्ता के प्रति 62 प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति 51 भौतिक गुणवत्ता के प्रति 43.8 व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगी 36 तथा मूल्यांकन की गुणवत्ता के प्रति 73 प्रतिशत है। जिससें स्पष्ट है कि शिक्षा गुणवत्ता के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण लगभग सकारात्मक है।

उपरोक्त विवेचना के आधार पर अध्ययनर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि कि शिक्षकों के शिक्षा के प्रति गुणवत्ता में मूल्यांकन मे उच्च स्थान प्राप्त किया। विषय की गुणवत्ता के प्रति द्वितीय स्थान, शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति तृतीय स्थान, प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति चतुर्थ स्थान, भौतिक गुणवत्ता के प्रति पंचम स्थान तथा सबसे निम्न स्थान व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति प्राप्त हुआ है।

सारणी 2: शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण का मापन

गुणवत्ता के कारक	पूर्ण सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्ण असहमत	सार्थकता परिणाम
गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	24.8	18.8	18.8	19.9	17.7	43.6
विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	30	31.6	18.3	13.5	6.6	61.6
प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	24.8	23.8	17.9	20.2	13.3	48.6
भौतिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	25	23.3	19.4	17.2	15	48.3
व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति दृष्टिकोण	20	23.8	20	18.8	17.4	43.8
मूल्यांकन के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	33.3	33.3	16.8	10	6.6	66.6

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने उद्देय नं0 2 विलेषण किया जिसमें शिक्षा गुणवत्ता को छह भागों में विभाजित कर शिक्षिकओं के दृष्टि कोण को 5 बिन्दुओं पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एवं पूर्ण सहमत पर विचारों की प्रतिशतता उपरोक्त सारणी में दर्शायी गयी है।

सहमत की प्रतिशत शिक्षा शिक्षा गुणवत्ता के प्रति 43.6 विषय की गुणवत्ता के प्रति 61.6 प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति 45.6 भौतिक गुणवत्ता के प्रति 48.3 व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगी 43.8 तथा मूल्यांकन की गुणवत्ता के प्रति 66.6 प्रतिशत है।

जिससें स्पष्ट है कि शिक्षा गुणवत्ता के प्रति शिक्षिकओं का दृष्टिकोण लगभग सकारात्मक है। उपरोक्त विवेचना के आधार पर अध्ययनर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि कि शिक्षिकाओं का मूल्यांकन मे उच्च स्थान प्राप्त किया। विषय की गुणवत्ता के प्रति द्वितीय स्थान, प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति तृतीय स्थान, भौतिक गुणवत्ता के प्रति चतुर्थ स्थान, व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के गुणवत्ता के प्रति पंचम स्थान तथा सबसे निम्न स्थान शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति प्राप्त हुआ है।

सारणी 3: वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति शिक्षक एवं शिक्षिकाएं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

गुणवत्ता के कारक	शिक्षक/शिक्षिकाएं	संख्या	सहमत प्रतिशत	प्रमाणित विचलन त्रुटि	टी प्राप्तांक	सार्थकता परिणाम
गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	शिक्षक	30	56.4	10	1.28	'नहीं
	शिक्षिकाएं	30	43.6			
विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	शिक्षक	30	62	9.71	0.041	'नहीं
	शिक्षिकाएं	30	61.6			
प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	शिक्षक	30	51	8.76	0.27	'नहीं
	शिक्षिकाएं	30	48.6			
भौतिक सुविधाओं गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	शिक्षक	30	43.8	9.96	0.45	'नहीं
	शिक्षिकाएं	30	48.3			
व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता के प्रति दृष्टिकोण	शिक्षक	30	36	9.79	0.79	'नहीं
	शिक्षिकाएं	30	43.8			
मूल्यांकन के गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण	शिक्षक	30	73	9.18	0.69	'नहीं
	शिक्षिकाएं	30	66.6			

स्वतन्त्रता अंश 98 सार्थकता स्तर '0.05 के साराणी मान (1.97)

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता के उद्देश्य नं0 3 परिकल्पना नं 3 वर्तमान शिक्षा गुणवत्ता के प्रति शिक्षक एवं शिक्षिकाएं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता की जांच की गयी है।

जिससे शिक्षा के गुणवत्ता को 6 कारक शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण विषय की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण, प्रशासनिक गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण, भाहथ्तक सुविधाओं गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण, व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगिता की गुणवत्ता के प्रति दृष्टिकोण में शिक्षक एवं शिक्षिकाएं के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए टी प्राप्तांक की गणना की गई है जिसमें टी का गणनात्मक मान स्वतन्त्रता अंश 98 सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से कम है। अतः परिकल्पना को स्वीकार करते हुए अध्ययनकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा है। वर्तमान शिक्षक गुणवत्ता के प्रति छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण के उपरांत अध्ययनकर्ता ने यह पाया कि वर्तमान शिक्षण गुणवत्ता शिक्षकों के दृष्टिकोण कुछ परिस्थितियों में उच्च स्तर कुछ परिस्थितियों में निम्न स्तर पाया गया जिसमें विषय की गुणवत्ता भौतिक स्थिति के

रूप में हुआ तथा पुरूष शिक्षकों का प्रशासनिक गुणवत्ता मूल्यांकन की गुणवत्ता एवं व्यावहारिक जीवन की उपयोगिता के लिये उच्च गुणवत्ता का स्तर पाया गया। जिससे स्पष्ट है कि गुणवत्ता के प्रति पुरूष एवं महिला शिक्षकों के सहमत के प्रति कारकों में विभिन्नता है। अर्थात महिला एवं पुरूष शिक्षक मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अलग–अलग पैमाना रखते हैं। अंतर की सार्थकता ज्ञात करने में यह प्राप्त हुआ कि गुणवत्ता के प्रति महिला एवं पुरूष शिक्षकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. वर्तमान शिक्षण की गुणवत्ता के बढ़ने हेतु शिक्षकों के सेमिनार का आयोजन प्रत्येक संख्या द्वारा किया जाना चाहिये जिससे वह मूल्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति जागरूकता बढ़े तथा गुणवत्ता में बढ़ सके।
2. शिक्षण की गुणवत्ता के प्रति बढ़ने हेतु शिक्षण व शिक्षकों के संबंध में मधुरता को जानना जिससे अभिभावक बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दें।
3. शिक्षण की गुणवत्ता में गिरावट में कमी करने हेतु शिक्षण छात्रों की उपस्थिति पर ध्यान दें।
4. विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप शैक्षिक सामग्री की व्यवस्था पर शिक्षक ध्यान दें।
5. विद्यार्थियों की परीक्षा मूल्यांकन प्रणाली पर शिक्षक ध्यान दें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ला के० के०, परिवार, ए०जे०एस० एवं के०पी० (2011) शिक्षा के दर्शनिक तथा समाज शास्त्रीय आधार मेरठः आर०लाल बुक डिपो।
2. गुप्ता एस०पी० एवं गुप्ता अलका, (2010) साँख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
3. सुलैमान, मुहम्मद (2009), मनोविज्ञान शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी।
4. रूहेला, एव०पी० (2005) विकासोन्युख भारतीय समाज में शिक्षण और शिक्षा, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।